Sanskritik aur Samajik Anusandhan
www.shodhjournal.com
ISSN: 2582-5852
Received: 05-05-2025, Accepted: 04-06-2025, Published: 20-06-2025
Volume 6, Issue 1, 2025, Page No. 4-5

कथाओं एवं उपन्यास में दलित विमर्श

डॉ. सराजेनी कोशले
अतिथि व्याख्याता, हिंदी विभाग, शास. नवीन महाविद्यालय बिर्रा, जाजंगीर चाम्पा, छत्तीसगढ, भारत

सारांश
हिन्दी दलित साहित्य में उपन्यास की उपस्थिति इसके उज्जवल भविष्य का सकेंत यू 'तो पहले भी दलित साहित्यकारों द्वारा उपन्यास लिखे गये। इसमें डॉ. धर्मवीर का पहला खन बलवन्त सिंह 'चर्वाक' का भूखी चिंगारी की लाल मुस्कुराहट जय प्रकाश कर्द का 'करूणा' तथा प्रेम कपाड़िया का माही की सौनान्दा' आदि के नाम लिये जा सकते हैं। लेकिन इन तीनों उपन्यासों के कथ्य दलितों की समस्याओं से सबंधित नहीं थे अतः इन्हें दलित उपन्यास की मान्यता प्राप्त नहीं हो सकी।

मूल शब्दः दलित, छप्पर, चेतना, परिस्थिति

किसी दलित उपन्यासकार का दलित चेतना सम्पन्न पहला उपन्यास 'छप्पर' को माना जाता है। जिसके लेखक जय प्रकाश कर्दम है। इस संबधं मे ंडॉ. एन सिंह ने लिखा है कि ––जब प्रकाश कर्दम का उपन्यास 'छप्पर' एक परिवर्तनकारी उपन्यास है जिसे मैं हिन्दी का पहला दलित उपन्यास मानता हूं।[1] 'छप्पर' की कथावस्तु एक मजदूर परिवार के युवक चन्दन की शिक्षा के लिए जदु दोजहद की कहानी है। जिसमें उसकी मां रमिया और पिता सुक्खा को गांव के ब्राम्हण, बनियों और ठाकुरों द्वारा मिलकर उत्पीड़ित किया जाता है कि वह सदियों से चली आती परम्पराओं को जोड़कर अपने लड़के को शहर में पढ़ने क्यों भेज रहा है? इससे समाज के उच्च वर्गीय लोगों की नाक कट जायेगी। लकिन सुक्खा इन सारे दबाओं से झुकने को तैयार नहीं होता है। जिसके कारण उसे घर से बेघर होना पड़ता है। वह गांव के पास के एक कस्बे में मेहनत मजदरी करने लगता है और शहर में चन्दन को पढ़ाई लिखाई के लिये पैसा भेजता रहता है चन्दन भी शहर में हरिया को झुग्गी में रहता है कॉलेज जाना है और लौटकर दलित बालकों के लिये एक स्कूल चलाने लगता है। इससे पूरी बस्ती में शिक्षा के प्रति आकर्षण तो बढ़ता ही है एक नई चेतना भी आने लगती है धीरे धीरे न्द्र अपने इस काम को शहर से देहातों तक ले जाना है, जो एक दिन जनान्दोलन का रूप ले लेना है। और दलित एक जूट होकर धार्मिक, आर्थिक और सामाजिक शोषण के विरूद्ध कर देते है सक्षेप में यही है 'छप्पर' का कथानक इसके कथ्क्य और शिल्प पर विचार करते हुए डॉ. पुरूषोत्तम सत्यप्रेमी ने लिखा है कि – 'मेरा आशय यह नहीं है कि छप्पर' ये दलित समाज यातानाओं उनके साथ किये जा रहे पाखण्डपूर्ण एवं अमानवीय सामाजिक व्यवहार अथवा उनकी दुर्गती उपेक्षा उत्पीड़न प्रवंचना की कथा के माध्यम से जय प्रकाश कर्दम ने महज अपनी कलात्मक भूख या रचनात्मक जिजीविसा को शांत करने की कोशिश की है अपितु इसके विपरीत यहां हम लेखक की सामाजिक प्रतिबद्धता उसके समतामूलक समाज की संरचना के सरोकारों से रूबरू होते हैं। अब यह बात अपनी जगह है कि बगैर मानवीय पीढ़ा के कोई रचना जन्म लेती ही नहीं है एक बात और मानना ही होगा कि जय प्रकाश कर्दम में शिल्प शैली की एक प्रवहाध्मयी ऊर्जा है। इसी ऊर्जा के कारण वह निर्झर की तरह छप्पर की अपनी कथा के साथ पाठक को बहा ले जाता है। उपन्यास की भाषा प्रवाहमयी और कहीं कहीं कृति है यह निःसकोच कहा जा सकता है कि जयप्रकाश कर्दम का उपन्यास 'छप्पर' हिन्दी दलित साहित्य की नींच का पत्थर या पथ प्रदर्शक माईल स्टोन' है।''[2] यह निःसंकोच कहा जा सकता है हिन्दी दलित साहित्य का यह प्रथम उपन्यास अनेक सभावनाएं जगाता हैं।

हिन्दी दलित साहित्य का दूसरा उपन्यास श्री सत्यप्रकाश द्वारा लिखित 'जस तस भई सबेर'[3] इस उपन्यास की कथावस्तु इस प्रकार है उपन्यास का एक पात्र हरसना भगत (ब्राम्हण) है जो लोगों की तरह तरह के अंधविश्वासों में उलझाता है। चौधरी दवीपाल इन कर्मकाण्डों की पूर्ति के लिये उनकी ऊची ब्याजदर पर कर्ज देकर उनके घर खेत हड़पता है उनसे बेगार करवाता है। वह गांव की दलित औरतों की इज्जत से खेलता है। मंगल पहलवान के दो बेटे सखन और हंसा है। सखन पजा पाठ, जात–जमान आदि का विराधी है वह इन बातों में विश्वास न करके मेहनत से कमाता है उसका परिवार सूखी है। उसका बेटा शिवदास पढ़कर बैंक में नौकरी पर लग जाता है वह एक सवर्ण युवती से प्रेम विवाह करता है जिसका सवर्णों द्वारा विरोध भी होता है।

दूसरी ओर हंसा और उसकी पत्नी दोनों घोर अंधविश्वासी व हर छोटी बड़ी आपदा में या किसी काम को करने में पहले हर सत्रा भगत की सलाह लेते है। हरसन्न भगत आपदा का कारण सखन द्वारा टोटकाया हवा छुड़वाए जाने की बात बनाना है और फिर देवता जाहर पीट को खुश करने के लिये उपाय बताता है। जिसमें सबसे प्रमुख होता है जात लगाना। आर्थिक तंगी के कारण हंसा जात लगाने के लिये देवी पाल से कर्ज लेता है कर्ज न चुकाये जाने पर बेगार करना है। पजा के बहाने देवीपाल और हरस भगत दोनों मिलकर हंसा की पत्नी की इज्जत लूटते हैं। हंसा पूरी तरह बर्बाद हो जाता है। सखान और हंसा में हमेशा झगड़ा रहता है दोनों कभी एक नहीं हो पाते लेकिन अंत में दलितों द्वारा एक जुट होकर देवीपाल और हरसन्ना भगत का विरोध किया जाता है उनको जेल होती है। अन्याय अज्ञानता और उत्पीड़न के शिकार दलितों के अंधकार पर्णू जीवन में जैसे तैसे ज्ञान और उत्थान का सवरेा होता है।

इस उपन्यास पर गम्भीरतापर्वूक विचार करने के उपरान्त श्री जयप्रकाश कर्दम लिखते हैं कि ''उपन्यास के जरिए सामाजिक और धार्मिक रूढ़िवादिती के खिलाफ समाज में चेतना प्रवाहित करने की दृष्टि से 'जस तस भई सबेरे' एक सफल प्रयास है''[4] इसके उपरांत मोहनदास नैमिशराय का उपन्यास 'मुक्ति पर्व' प्रकाशित हुआ है। जो अपने कथ्य में सम्पूर्ण दलित संघर्ष को समेटे हुए है। इसका शिल्प और शैली अन्य उपन्यासों से प्रौढ़ एवं प्रवाह युक्त है जो हिन्दी दलित साहित्य में आने वाले उपन्यासों के लिये मार्गदर्शक होगी।

निष्कर्ष

ओमप्रकाश वाल्मीकि दलित साहित्य लेखन क अम्ग्रणी कवि है, जिन्होंने दलित साहित्य के कवि रूप में ही नहीं बल्कि कहानी, आलोचना के क्षेत्र मे ंभी अपनी समर्थ पहचान बनाई है। उन्होनें नाटक तथा आत्मकथा लिखकर दलित साहित्य लेखन मे ंअपनी विशिष्टता कर परिचय दिया है। दलित समाज मे ंजन्मे, पले और बड़ेहुए ओमप्रकाश वाल्मीकि ने अपने साहित्य मे ं'दलित' भावना को प्रस्थापित कर रहा था। वाल्मीकि जी ने दलित समाज की पीड़ा और आक्रोश को अपने साहित्य के माध्यम से प्रस्तुत किया है।

संदर्भ ग्रंथ

1. जय प्रकाश कर्दम 'छप्पर' 1994 सामयिक प्रकाशन नई दिल्ली
2. डॉ. एन. सिहं उत्पीड़न का रचनात्मक प्रतिफलनः छप्पर (पुस्तक समीक्षा न्याय चक्र, मासिक, दिल्ली 15 मई से 14 जुलाई 1994 पृष्ठ 54
3. सत्यप्रकाश: जस तस भई सबेर
4. जय प्रकाश कर्दन 'छप्पर' 1994 सामयिक प्रकाशन नई दिल्ली